NATH GROUP

नाथवार्ता

खरीफ 2012 विशेषांक

नाथ बायो-जीन्स (इं) लि. की त्रैमासिक गृहपत्रिका

प्रबंध संचालक श्री. सतीश कागलीवालजी का संदेश

आत्मविश्वास के साथ खेती करे!

किसान भाईयों,

'नाथवार्ता' खरिफ 2012 मौसम विशेष अंक के माध्यम से, आप से संवाद करते हुए मै एक खुषी का अहसास कर रहा हूं।

संकर बीज निर्माण तथा जैवविज्ञान क्षेत्र मे हम पिछले 32 से भी अधिक वर्षो से कार्यरत है। कृषि व्यवसाय हमारा केवल व्यवसाय नही है, यह हमारे देश की संस्कृती भी है। इसलिये खुषहाल किसान ही हमारे देश को सशक्त और संमृध्द बनानेवाला, सबसे महत्त्वपूर्ण घटक है। किसान के लिये संकर बीज बनाकर, तथा उसे समयपर उसके हाथ मे देने का कार्य हम एक निष्ठा और लगन के साथ करते है। किसान को भरोसे का बीज, उमदा क्वॉलिटी का बीज, अच्छी उपज देने वाला बीज समयपर मिलना, उसका अपना बुनियादी अधिकार होता है। आज जैविक तकनीक तथा वैश्वीकरण के कारण किसान को अच्छे उत्पाद मिल रहै है।

परंतु हर साल यह खबरे आती रहती है, की बीज के लिये किसान को लडना पड रहा है। पुलीस-प्रशासन की लाठी का भी सामना कई जगह करना पड रहा है। यह दुःस्थिती इसलिये पैदा होती है, की किसान कुछ गिने चुने बीजों के लिये आग्रही होता है। फलस्वरुप उन उत्पादो का कृत्रिम शॉर्टेज पैदा कर, किसानों को लुटने वाले असामाजिक तत्व सक्रिय हो जाते है। इसलिये किसान को चाहिये की वो अपनी खरीफ मौसम का नियोजन ठीक से करे। इस नियोजन का एक महत्त्वपूर्ण हिस्सा होता है, बीजों का चयन। इस अंक मे दी गयी सामग्री किसानों का ज्ञान बढाकर उसे बीज चयन निर्णय मे अवश्य सहाय्यकारी साबित होगी।

अपनी जमीन, जलवायु परिस्थिती, कृषिलागत की अपनी तैय्यारी, गत वर्षो का अनुभव, विविध ज्ञानसुत्रों से प्राप्त जानकारी तथा मार्गदर्शन इन सभी का उपयोग कर, एक आत्मविश्वास और उंचे मनोबल के साथ, सकारात्मक भावना के साथ किसान को खेती करनी चाहिये। सही अभ्यास और नियोजन से यह आत्मविश्वास तथा सकारात्मक मानसिकता निश्चीत ही बनती है। बिना अभ्यास और तैय्यारी के खरिफ मौसम का स्वागत करना कोई माने नही रखता। आज सरकार से लेकर हर कोई किसान को सहाय्यता करने के लिये तत्पर है। इस स्थिती का किसानों ने लाभ अवश्य उठाना चाहिये। किसी भी प्रकार का दबाव, तनाव या लालच का शिकार न होते हुए किसानों को अपनी जागरुकता का परिचय देना चाहिये। आत्मविश्वास के साथ खेती करना चाहिये।

हमारी बहुतसी शुभकामनांए! स्वस्थ किसान-देश की शान!

जय हिंद
आपका,

सतीश कागलीवाल

संपादकीय चिट्ठी :

'नाथवार्ता' का यह विशेष अंक देते हुए हम हर्ष की अनुभूति कर रहे है। यह विशेष अंक खरीफ-2012 मौसम को ध्यान मे रख कर, विशेष रुप से निर्माण किया गया है।

मौसम विभाग के अनुमान नुसार इस वर्ष मानसून अर्थात बरसात देशभर मे समय पर शुरु होगी तथा सामान्य होगी। यह खबर निश्चीत रुप से ही किसानों के लिये महत्वपूर्ण है। सांत्वना देनेवाली है। क्यो कि भारतीय किसान तथा कृषि ज्यादातर मानसून पर निर्भर है। इसलिये मानसून का इस वर्ष सामान्य होना सभी के लिये एक बडी राहत होगी। सर्वशक्तिमान परमेश्वर से हम यही प्रार्थना करते है की उसकी कृपा दृष्टी जीव सृष्टीपर हमेशा बनी रहे।

इस विशेष अंक मे हमारा यह प्रयास है की, हमारे कृषक भाईयों को नाथ के प्रमुख बीज-उत्पाद जो खरीफ मौसम मे लगाये जाते है, उसकी जानकारी दे। किसान को आज उपयुक्त जानकारी मिलना, समय पर मिलना बहुत महत्त्वपूर्ण बात है। आशा है ईस अंक के माध्यम से हम दे रहे कपास, धान, बाजरा, मक्का तथा अन्य फसलों की जानकारी किसान के लिये उपयुक्त साबित होगी, तथा उन्हे बीज-चयन का निर्णय लेने मे सहायता करेगी।

इस अंक मे हमारे वैज्ञानिकों, ब्रांच मॅनेजर्स तथा अन्य सहयोगीयों का बहुत अच्छा सहयोग हमे मिलां है, उनके प्रति हम आभार जरुर प्रकट करना चाहेंगे। चूंकी यह अंक मानसून स्पेशल या खरीफ स्पेशल अंक है, इसमे हम जो सामग्री नियमित या सामान्य रुप से सम्मिलित करते है, वह सम्मिलित नही की गयी है। वह हमारे अगले अंक मे, जो जुलै 2012 मे प्रसिध्द होगा, उसमे अवश्य सम्मिलित की जायेगी।

खरीफ मौसम की तैय्यारियाँ पिछले कुछ हप्तों से किसानभाई, बीजविक्रेता, बीज कंपनीयाँ, सभी के स्तर पर जोरशोर से चल रही थी। समयपर और सामान्य रुपसे शुरु होनेवाली बरसात से यह सारी मेहनत अवश्य रंग लायेगी।

हम किसानों को, हमारे विक्रेताओंको, तथा सभी संबंधित जनों को खरीफ-2012 मौसम की शुभकामनांए देते है।

नाथवार्ता टीम

कम पानी मे अच्छी उपज दे अर्जुन-21

अर्जुन-21 प्रजाती सही अर्थो मे असिंचित खेती के लिये मानो एक वरदान है। असिंचित परिस्थिती या कम पानी वाली स्थिती मे बहुत कम प्रजातीयाँ ऐसी है, जो किसान को उपज देती है। कम पानी की वजह से, कपास के पौधों का विकास स्वस्थ रुप से होता नही, तथा उसके डेंडू छोटे आकार एवं कम वजन के बनते है। अर्जुन-21 मे ऐसा नही होता। डेंडूओं का आकर तथा वजन मे कमी नही आती। इसलिये यह प्रजाती आम कपास कृषक के लिये उचित साबित हुई है।

यही वजह से अर्जुन-21 की मांग मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र, गुजरात तथा अन्य प्रदेश जहाँ बरसाती पानी परही कपास लगाई जाती है, ऐसे क्षेत्र मे लगातार बढ रही है। अर्जुन-21 प्रजाती का दुसरा और महत्त्वपूर्ण फायदा यह है, की ये प्रजाती उसे खाद-पानी मिलने पर दुबारा उपज देने की क्षमता रखती है। इस पुर्नबहार द्वारा (रिफ्लश) किसान को औसतन उपज के साथ साथ दुसरी बार भी उपज मिलती है। इसलिये इससे किसान बहुत खुष है। कई किसानों ने इसका वर्णन दुनाली बंदूक-डबल बॅरल गन इन शब्दों मे किया है। वह कहते है, "अर्जुन-21 है ही दो नलीयों वाली बंदूक की तरहाँ। यह दो बार फायर करने की क्षमता रखती है। महाराष्ट्र के किसानों ने अर्जुन प्रजाती का और एक लाभ बताया है। अर्जुन-21 के पत्तो पर सूक्ष्म रुप मे केश होते है, जिससे उसपर चुसियाँ कीट बैठ नही सकती और फसल का नुक्सान कर नही सकती! अन्य कपास प्रजातीयों को चुसियाँ कीट के प्रकोप से बचाने के लिये जितनी बार दवाईयाँ छिंटनी पडती है, उससे लगभग पचास प्रतिशत कम छिटाईया अर्जुन-21 के लिए बस है।

यह बताते है हमारे मध्यप्रदेश के प्रबंधक श्री. एन. एम. मानकर । उनका निरीक्षण है की यह प्रजाती मध्यप्रदेश के लिये बहुत ही उपयुक्त साबित हुई है।

हमारे गुजरात राज्य के प्रबंधक श्री. एम. एन. पिपलिया बताते है, "गुजरात राज्य का किसान एक प्रगतीशील किसान है। वो हर प्रजाती को अच्छी तरहाँ से परखता है, और बाद मे ही उसका स्वीकार करता है। गुजरात के कपास उत्पादक किसानों ने भी 'अर्जुन-21' की गूण विशेषताओं को सराहा है। इसका डेंडू पकने पर बहुत अच्छी तरहा से खुलता है, जिससे चुनाई आसान हो जाती है, और तेजी से हो जाती है।"

महाराष्ट्र ब्रांच के प्रबंधक श्री. वसंत वायाळ ने अर्जुन-21 की एक और खासियत को सामने रख्खा है। वे कहते है, "अर्जुन-21 प्रजाती का पौधा हराभरा घनी शाखांए एवं पत्तोवाला होता है। इसका दृश्यरुप बहुत ही आकर्षक दिखता है। अन्य प्रजातीयों के साथ अगर अर्जुन-21 को लगाया जाये तो अर्जुन-21 का प्लॉट अपने दृश्यरुप से दर्शक का ध्यान सबसे पहले आकर्षित करता है।"

कुल मिलाकर यह, अवश्य कहाँ जा सकता है की आम किसान ने 'अर्जुन-21' प्रजाती को अवश्य लगाना चाहिये। कम पानी मे वो अच्छा विकसित होगा, सुंदर दिखेगा, तथा अच्छी उपज देगा। दुबारा खाद-पानी मिलने पर दुसरी बार भी बाजवी उत्पादन फिरसे देगा ।अर्जुन-21 प्रजाती की मांग सभी प्रदेशों से निरंतर बढ रही है।

(प्रस्तुतीः नाथवार्ता ब्युरो)

कपास की भरोसेमंद प्रजातीः एक्स्प्रेस

कपास की भरोसेमंद प्रजाती के तौरपर किसानों मे 'एक्स्प्रेस' प्रजाती का नाम बहुत लोकप्रिय है। इस लोकप्रियता का मुख्य कारण है, इस प्रजाती की पिछले कई वर्षो से लगातार अच्छी उपज देने की क्षमता। नाथ कंपनीने फ्युजन बीटी तकनिक वाली जो कपास प्रजातियाँ बाजार मे उतारी, उसमे आरंभ के दिनो मे उतारी गयी मुख्य प्रजाती है 'एक्स्प्रेस', "इस प्रजाती की खासियत यह है की जो किसान लम्बी अवधी वाली प्रजाती पसंत करते है, उनको 'एक्स्प्रेस' बहुत भा जाती है। खासकर महाराष्ट्र के हमारे खान्देश विभाग के जलगांव, धुलियाँ, नंदूरबार जिलों के किसानों को यह प्रिय प्रजाती रही है।" महाराष्ट्र के प्रबंधक श्री. वसंत वायाळ बताते है। इस प्रजाती को खास रुपसे जिसे 'सेमीइरिगेटेड' अर्थात अर्धसिंचित क्षेत्र कहते है, उसके लिये बनाया गया है। मध्यम श्रेणी के किसान के लिये बनाया गया है।

मध्यप्रदेश के हमारे प्रबंधक श्री. मानकर तथा गुजरात राज्य के प्रबंधक श्री. पिपलिया बताते है, "आरंभ के कुछ दिनोंतक 'एक्स्प्रेस' प्रजाती का पौधा और उसका विकास, देखने मे बहुत प्रभावीशाली होता नही है, पर बाद मे डेंडूओं की संख्या, आकार और अंतिमतः मिलनेवाली उपज किसानो को संतुष्ट कर जाती है। एक्स्प्रेस का पौधा आखिर तक हरा रहता है। लाल पडता नही, जबकी अन्य कंपनीयो की प्रजातियाँ लाल पड जाती है। इसी विशेषता के कारण अनुभवी किसान 'एक्स्प्रेस' का चयन करते है। 'एक्स्प्रेस' एक भरोसेमंद प्रजाती इसिलिये मानी जाती है। थोडा-बहूत पानी मिल जाये तो एक्स्प्रेस की उपज मे और भी अधिक बढौती होती है। खान्देश से लगे मध्यप्रदेश के जिलों मे भी एक्स्प्रेस की लोकप्रियता बरकरार है।

आंध्रप्रदेश की पसंद 'चित्रा'

भारत मे कपास का उत्पादन लेनेवाले महत्वपूर्ण राज्यों मे एक अग्रणी राज्य है आंध्रप्रदेश। आंध्रप्रदेश के किसानों की पसंदिदा कपास प्रजाती है 'चित्रा'।

'चित्रा' को फ्युजन बीटी तकनिक का संरक्षण मिला हुआ है, इसलिये चारो प्रकार की डेंडू इल्लियों का सफाया करने की इसमे एक अंगभूत शक्ती तो है ही, साथ साथ यह प्रजाती सभी तरहा की जलवायु और कृषि परिस्थितीयों मे भी आंध्र प्रदेश मे लगातार अच्छी उपज दे रही है।'' बताते है आंध्रप्रदेश के हमारे अनुभवी प्रबंधक श्री. रविकुमार । आदिलाबाद, वरंगल से लेकर आंध्रप्रदेश मे जहाँपर भी कपास लगती है, उन सभी गांवों-कस्बों मे एक नाम अवश्य ही मशहूर है, और वो है फ्युजन बीटी 'चित्रा'।

'चित्रा' प्रजाती का कपास अच्छे और बढियॉ क्लॉलिटी का होता है। डेंडूओं की संख्या अधिक होती है, तथा डेंडू गिरते झडते नही। विभिन्न किस्म की कीट के साथ जुझने की ईस 'चित्रा' की शक्ती भी भरपूर है। आंध्रप्रदेश के किसानों को ऐसे ही एक मजबूत, रफ-टफ प्रजाती की तलाश थी। जो 'चित्रा' के रुप मे पुरी हुई है।

श्री. रविकुमार 'चित्रा' की एक और खासियत बयान करते है। ''चित्रा प्रजाती के डेंडू का औसतन वजन लगभग छह ग्राम होता है, तथा डेंडू पकनेपर अच्छी तरहा से फुटते है। फलस्वरुप चुनाई का खर्च कम आता है। मजदुरी कम लगती है। आंध्रप्रदेश मे बीटी कपास की कई प्रजातियों बेची जाती है, पर सब मे 'चित्रा' का स्थान मानो कोई महारानी जैसा है। और इसलिये यह प्रजाती लगातार आंध्र मे बढ रही है।

म.प्र. मे 'काशीनाथ' की मांग बढी

मध्यप्रदेश के कुछ किसान ऐसे भी है, जो हमारे 'काशीनाथ' कपास प्रजाती के साथ बहूत गहरी तरहाँ से जुडे हुये है। आज बाजार मे कपास की सैकडो प्रजातियों के बीज उपलब्ध है। पर ये किसान सालो साल 'काशीनाथ' ही लगाते है। ''जब काशीनाथ हमे अच्छी उपज दे रहा है, और उसकी काश्तकारी मे खर्चा भी कम है, और कोई टेन्शन भी नही, तो हम कोई अन्य प्रजाती के बारे मे सोचें भी क्युं?''

'काशीनाथ' के किसानों का यह सवाल ऐसा है, जिसका कोई जवाब नही! ये किसान दीर्घ अवधी वाले 'काशिनाथ' की देखभाल भी ऐसी करते है, जैसे कोई माँ अपने लाडले संतान की देखभाल करती है।

'जगन्नाथ-2' का झंडा और भी बुलंद हुवा!

'जगन्नाथ-2' कपास प्रजाती के बीजों की सभी राज्यों से बहूत मांग इस वर्ष रही है। यह माँग इतनी ज्यादा है की, हम, हमारी मर्यादाओं की वजह से उसकी आपूर्ती करने मे अपने आप को असमर्थ महसुस कर रहे है।

'जगन्नाथ-2' प्रजाती सिंचित स्थिती मे अच्छी देखभाल मिलने पर, खाद मिलने पर उपज के ऐसे कीर्तीमान प्रस्थापीत करती है, जिसका कोई तोड नही। सभी किसान पानी-खाद तथा देखभाल कर नही सकते, इसलिये इन बीजों का निर्माण भी सीमीत मात्रा मे ही किया जाता है। पर जगन्नाथ-2 की बढती हुई मांग को देखकर अगले मौसम मे उसका अधिक निर्माण जरुरी लग रहा है।

उत्तरी भारत मे नाथ उत्पादों की धूम

नुक्कड नाटक व्हॅन

समूचे उत्तरी भारत मे खरीफ-2012 मौसम मे नाथ के विभीन्न उत्पादों की धूम जारी है। बाजरा, मक्का, धान, कपास समेत सब्जीभाजी बीज उत्पाद उत्तरी भारत के राजस्तान, हरियाणा, पंजाब, उत्तरप्रदेश, बिहार राज्यों मे जोर शोर से बिक रहे है, ऐसी जानकारी हमारे उत्तरभारत प्रभाग के श्री. सुभाष संधूजीने बडे हर्षोल्लास और आत्मविश्वास के साथ दी है। नुक्कड नाटक मनोरंजन और जनजागृती का एक प्रभावशाली माध्यम है। हमारी जयपूर ब्रांच नुक्कड नाटक व्दारा न केवल दौसा, भरतपूर, अलवर, सिकड, नागौर आदि जिलों के लोगों का मनोरंजन कर रहा है, बल्की साथ मे नाथ की बाजरा प्रजातिया बीग बी, एनबीएच-1717 आदि की गुण विशेषताओंको भी प्रभावशाली ढंग से समझा रही है। इस नुक्कड नाटक मंडली मे पाच कलाकार है, जिसमे ढोलक, ड्रम तथा मंजिरा जैसे साज भी इस्तेमाल किये गये हैं। एक महिने के अवधी मे यह मंडली नुक्कड नाटक के 150 खेल करेगी। साथ साथ 'छोटू-लंबू' रोड शो भी लोक कलाकारों के साथ जगह जगह अपने कार्यक्रमों द्वारा जनता को आकर्षित कर रहे है। विशेष प्रकार की लकडी को पैरो से जोडकर 'लंबू' तैय्यार होता है, साथ मे 'छोटू' भी है। इन पात्रों को ढोल बजाने वालों का साथ भी है। यह 'टिम' खास रुपसे साज सज्जा से बनाये गये गाडी मे जगह जगह धुम कर लोगों का ध्यान आकर्षित कर रही है।राजस्थान के प्रबंधक श्री. अभिरंजन द्विवेदी के मार्गदर्शन मे कॅम्पेन जोर शोर से चा रहा है।

'किस्मत की चाबी' योजना के कुपन भी इसी कॅम्पेन अंर्तगत काटे जा रहे है। नाथ के प्रचार-प्रसार के इन अभिनव एवं प्रभावशाली तरिकों की पुरे राजस्थान मे भरपूर प्रशंसा हो रही है। किसान और व्यापारी दोनो ही इससे खुष है। अच्छे साऊंडसिस्टम का इस्तेमाल करने से नुक्कड नाटक तथा रोड शो एक अलग ही प्रभाव पैदा कर रहे है।

आग्रा हेड क्वॉर्टर के हमारे श्री. बी. एन. मिश्रा, लखनऊ के श्री. नविन तिवारी, हरियाणा-पंजाब के श्री. सुभाष संधू तथा बिहार के श्री. राजेश रंजन जी हमारे मक्का बीज उत्पादों को लेकर काफी जोर शोर से सक्रिय है। मक्का मे सिंगल क्रॉस बीज सिंघम, बीग बॉस तथा एनएमएच-03 उत्तरी भारत मे लगातर बढत ले रहे है। इसके मुख्य कारण है इन प्रजातीयों की गुणविशेषतांए। आकर्षक रंग के दाने, भरपूर उपज, आखीर तक पौधे हरे रहते है, तथा तेज हवा मे भी गिरते नही। इन तिनो मक्का प्रजातियों की एक और खासियत है, की ये प्रजातियाँ खरीफ तथा रब्बी इन दोनो मौसमो मे लगाई जा सकती है। मौसम के अनुसार उपज मे थोडाबहुत अंतर जरुर आता है, परंतु किसान इस बात को अच्छी तरहाँ से समझता है। और वो बीग बॉस, एनबीएच-03 तथा सिंघम के उपज से संतुष्ट है, सो इन प्रजातियों की मांग बढ रही है।

धान बीज : उत्तरप्रदेश, बिहार, पंजाब की एक और महत्वपूर्ण फसल होती है धान, धान मे उत्तरभारत मे फोर्ड-140, लोकनाथ-510, मेनका, करिना इन प्रजातियों का अच्छा बोलबाला चल रहा है। 'मेनका' का बासमती जैसा गंध किसान को तथा उपभोक्ता को भा रहा है। तो 'फोर्ड-140' धान से मिलने वाली चांवल की अच्छी उपज उसे संतुष्ट कर रही है। लोकनाथ-510 प्रजाती तो पिछले कुछ वर्षो से उत्तरी भारत के धान क्षेत्र को किसानों की पहली पसंद रही है। यह प्रजाती मे गंध नही है, पर इस प्रजाती के पौधे गिरते नही और भरपूर महीन चावल देते है।

कुल मिला कर बाजरा, धान, मक्का फसलों मे यह खरीफ-2012 मौसम नाथ उत्पादों के लिये अवश्य ही एक अच्छा मौसम सिध्द होगा. उत्पादों की गुणविशेषतांओं के साथ साथ श्री.राम जांगीड, सुभाष संधू के मार्गदर्शन मे चल रहे सभी राज्य प्रबंधक तथा उनकी टीम जो प्रयास अपने अपने क्षेत्र मे कर रही है, यह उसीका नतिजा है।

भटिंडा, अबोहर श्रीगंगानगर तथा अन्य कपास उत्पादक जिलों मे हमारी 'युवराज' प्रजाती अपनी लंबी चौडी कद काठी, भरपूर शाखांए और भरपूर डेंडुओं से कपास उत्पादक किसान को लगातार मोहीत कर रही है। खास उत्तरी भारत के लिये विकसित किये गये इस प्रजाती को बहुत अच्छा समर्थन मिल रहा है। यह कुछ लंबा समय लेता है, पर उत्तरी भारत के किसानों की अपेक्षा भी उसी प्रकार की है, इसलिये 'युवराज' उत्तरीभारत के कपास उत्पादक किसानो मे लोकप्रिय है। कपास को पंजाब मे 'नरमा' कहते है। यह शब्द भी बडा अर्थपूर्ण है।

नाथ बायो-जीन्स (इंडिया) लिमिटेड कंपनी के कुल व्यवहार मे उत्तरी भारत का योगदान महत्वपूर्ण रहा है। इस खरिफ-2012 मौसम मे भी उत्तरी भारत अच्छा योगदान देगा, इसमे संदेह नही। देश भर मे चल रहे मार्केटींग कॅम्पेन को श्री.नविद मगरबी सुचारू रूप से संचालित कर रहे है ।

बिहार-झारखंड मे भोजपुरी गायिका सुश्री देवी ने बजाया नाथ उत्पादों का डंका

मई महिने मे बिहार-झारखंड के विक्रेता बंधुओं का शानदार संमेलनों का आयोजन कर, नाथ कंपनीने खरीफ-12 का अपना बिगुल बजा दिया है। एक हजार से भी अधिक विक्रेता गण कंपनी के इन 'रिचार्ज' संमेलन मे सम्मिलित हुये।

विख्यात भोजपुरी गायिका सुश्री देवी ने इन अवसरोंपर अपने धमाकेदार गीतों से उपस्थित विक्रेताओं का भरपूर मनोरंजन किया तथा नाथ धान उत्पादों की एक से एक बढियॉ स्कीमों का विमोचन भी किया। धान के लोकनाथ-510, 505,गोरखनाथ 509 तथा कबीर-508 उत्पादों की यह योजनाए किसान एवं व्यापारी गण दोनों के लिये बहुतही आकर्षक तथा लाभप्रद है। खास कर लोकनाथ-508 के तीन किलो धान बीज खरिदनेपर जो एक किलो बीज उपहार के तौर पर देने की योजना है उससे किसानों मे बहुत आनंद एवं चेतना निर्माण हुयी है। ''नाथ की यह 'रिचार्ज' मिटींग सही अर्थो मे डिलरों को रिचार्ज अर्थात प्रेरणा देने मे सफल हुयी है'' कहा इन मिटिंगो मे सहभागी कई डिलरों ने। यह मिटिंग और सुश्री देवी के कार्यक्रम इस वर्ष के बीज प्रमोशन के सबसे अच्छे कार्यक्रम रहे है तथा खरिफ-2012 मे इससे कंपनी को बहुत बडा लाभ होगा, ऐसा विश्वास बिहार-झारखंड के प्रबंधक राजेश रंजन तथा बिझनेस लीड राम जांगीड ने अभिव्यक्त किया है।

किसानों को अच्छी उपज देनेवाले सब्जीभाजी के हमारे भरोसेमंद बीज

- **Watermelon**
  Ranjit(NWMH-4107)
- **Cucumber**
  NCH-2, NCH-840
- **Sponge Gourd**
  Kajal(NSGH-7001)
  Komal(NSGH-7000)
- **Bitter Gourd**
  Sartaj (NBIGH-4006)
  NBIGH-07
- **Bottle Gourd**
  Prasad-4000
- **Ridge Gourd**
  Shruthi (NRGH-111)
- **Brinjal**
  NBH-03
- **Tomato**
  NTH-1222, NTH-1144
  NTH-671, NT-670
  Damini-131
- **Chilli**
  NCH-748, NCH-886
- **Okra**
  Trupti(NOH-443)
  Super Lady Luck
- **Coriander**
  Evergreen
- **Cauliflower**
  White Magic
- **Onion**
  NO-1068, NO-1069

अनुरोध

आप को यह अंक कैसा लगा वह आप पत्रद्वारा अवश्य बतायें. आप के पत्र अगले अंक मे अवश्य सम्मिलित किये जायेंगे. पता बाजु मे दिया है. अवश्य लिखिये !

'नाथवार्ता'
नाथ बायो-जीन्स (इं) लि.की त्रैमासिक गृहपत्रिका
निःशुल्क निजी वितरण के लिए
हिंदी तथा अंग्रेजी भाषा में प्रकाशित

- नाथवार्ता टीम

प्रबंध संचालक
श्री. सतीश कागलीवाल
प्रकाशक
श्री. संतोष जोशी
डिझाईन-सजावट
श्री. शिवशंकर फाळके
संपादकीय समन्वय
श्री. सुधीर सेवेकर

पत्राचार एवं संपर्क के लिए पता -
'नाथवार्ता' द्वारा नाथ बायो-जीन्स(इं)लि.
नाथ रोड, नाथ हाऊस, औरंगाबाद-431 001.
फोनः 0240-2376313 से 17,
फॅक्सः 0240-2376188
ईमेलः falke@nathseeds.com